अनपढ़ की पीड़ा

गांव से शहर आया रामू कदम कदम पर दिक्कतें महसूस करता है। गांव में जब स्कूल जाना था तब किसी ने नहीं बताया कि स्कूल जाना चाहिए या पढ़ना-लिखना कितना ज़रूरी है। आज जब वह पढ़ना चाहता है उसे नहीं मालूम कि वह कहां और कैसे पढ़ सकता है।

रिक्शा घसीटते-घसीटते थककर सोचता है कि काश वह पढ़ा होता। उसके लिए कुछ और रास्ते रोज़ी-रोटी कमाने के खुले होते। अब पढ़ने की बात सोचे कि परिवार के लिए रोटी जुगाड़ने की।

मूर्ति बनाने में माहिर पर अनपढ़ गोपी को बड़ी शर्म आती है। उसे चार लोगों से पूछना पड़ता है कि जयपुर से मालपुरा कौन सी बस जाएगी। तब भी उसके मन में गलत बस में चढ़ जाने का डर बना रहता है।

शिबू दस साल की उम्र में ही जेब कतरे का काम करने के लिए ढकेल दिया गया था। शहर आकर उसे कभी-कभी लगता कि वह इंसान नहीं जानवर है। काश वह पढ़ा होता। इस दमघोटू वातावरण से बाहर निकलने की राह वह ढूंढ नहीं पाता है। मां-बाप कह देते थे कि पढ़ लिख कर क्या कलक्टर बनना है। पर अब वह जान गया है कि कलक्टर न सही इंसान तो बन सकेगा। यह कचोट उसके दिल में बहुत गहरी है।

क्या करें?

शराबी पति से दुखी शीला दो बच्चों की मां अपने भूखे बच्चों के लिए भीख मांगने को मजबूर है। वह सोच नहीं पाती कि नन्हें बच्चों के साथ अन्य क्या काम कर सकती है।

देवरानी पढ़ी-लिखी आती है तो जिठानी अपने को हीन समझने लगती है। उसे अपना अनपढ़ होना खलने लगता है।

खेतों में काम करती राधा जानती है कि इतनी मेहनत करने पर भी वह ज़्यादा नहीं कमा पाती। खेती के आधुनिक तरीकों की उसे जानकारी नहीं। पुरुष तो ट्रैक्टर चला कर बुवाई कर लेते हैं।

चूना-पत्थर ढोने वाली मीतो जानती है कि पढ़ी-लिखी औरत के मुकाबिले उसे बहुत कम

मजदूरी मिलती है। उसका काम भी छोटा कहलाता है। अनपढ़ होने के कारण उसे नया कुछ सूझता ही नहीं।

अनपढ़ रमा को अपने पढ़े-लिखे न होने का गम तो है ही। यह गम भी खाता रहता है कि वह अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पा रही है।

पढ़ने की प्रेरणा

अभिलाषा तो है... किसी अनपढ़ को पढ़ी-लिखी बीबी मिल जाए तो वह साक्षर होने की ठान लेता है। दिनेश की बीबी इंटर पास आई जबकि वह केवल मिडिल (आठवीं) पास था। शादी के बाद उसने हाई स्कूल पास किया, इंटर किया। वह सरकारी दफ्तर में चपरासी से क्लर्क बन गया। अब उसमें और आगे बढ़ने की लगन है।

बहुतों के मन में साक्षर होने की अभिलाषा है, लेकिन "भूखे भजन न होए गोपाला", पर पहले उन्हें रोज़ी-रोटी जुटाने के लिए काम देना होगा। जब तक सरकार आर्थिक परिस्थिति में सुधार लाने की साथ-साथ कोशिश नही करती तब तक साक्षरता की योजनाएं कैसे सफल हो पाएंगी?

पुरानी धारणा कि पढ़-लिख कर क्या होगा ख़त्म करनी होगी। ऐसे भी लोग हैं जो दिल से पढ़-लिख लेना चाहते हैं। उनके रास्ते में आ रही बाधाओं को दूर करना होगा। ऐसा न हो कि सरकार की योजनाएं और लोगों की इच्छाएं दो समानांतर रेखाओं की तरह मिल ही न सकें। जो अपने बच्चों को पढ़ाने की इच्छा संजोए हैं उन तक शिक्षा पहुंचानी है।

(राज्य संदर्भ केन्द्र, जयपुर के एक सर्वेक्षण और श्रीमती लक्ष्मी अशोक की रपट पर आधारित)